Dr. Pragya Rai, As. Prof. Pol. Science,
Maharaja College,
BA-I, Paper I

राज्य की प्रकृति संबंधी गाँधीवादी सिद्धान्त —

गाँधीवाद राज्य की आवश्यकता को स्वीकार करता है यद्यपि यह राज्य को हिंसा एवं शोषण का साधन मानता है। गाँधीवाद राज्य को इसलिये आवश्यक मानता है क्योंकि मनुष्य में अहिंसा तथा सामाजीकता संबंधी गुण नहीं भी हो सकते हैं।

गाँधीवाद के अनुसार राज्य का प्राधिकार सत्ता के विकेन्द्रीकरण पर आधारित किसी व्यवस्था द्वारा सीमित कर दिया जाना चाहिये जिसे ग्राम समुदाय या पंचायती राज कह सकते हैं। गाँधीवाद राज्य का एक विशिष्ट भारतीय रूप है। निश्चित रूप से वह राज्य को परिसीमित करते

9 MONDAY
040-325
Week 7

हैं परन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि वह इससे छूट देते हैं। गाँधीजी की राज्य संबंधी अवधारणा मार्क्सवादी राज्य से इस संदर्भ में मिलती है कि दोनों ही राज्य को एक हिंसा-तंत्र के रूप में लेते हैं।

प्रश्न -1- राज्य के गाँधीवादी सिद्धान्त संबंधी विशिष्ट लक्षणों को बतायें।

2- राज्य के गाँधीवादी सिद्धान्त के साथ उदारवादी और मार्क्सवादी सिद्धान्त की तुलना कीजिये।